Blind candidate

HINDI ELECTIVE (002) class - XII

खण्ड - क

प्र०। निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

उत्तर(क) 'वरिष्ठ नागरिक' शब्द सुनते ही हमारे मन-मस्तिष्क में उन लोगों की छवि उभरती है जो प्रभु की कृपा और अपने माँ-बाप, गुरुजन और आदि के 'दीर्घायु' होने के आशीर्वाद से मानव जीवन की बसंत बहार के 60-65 वर्ष व्यतीत कर चुके हैं। जब वे अपने बच्चों से दूर हो जाते हैं तब वे अकेले पड़ जाते हैं।

उत्तर(ख) वृद्ध जनों के अकेलेपन को दूर करने के लिए उन्हें उनके बच्चों द्वारा अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए। उन्हें उनको अपने पास रखना चाहिए, उन्हें वृद्धाश्रम में न भेजकर अपने पास रखकर उनकी देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि वृद्ध लोग केवल बच्चों का साथ चाहते हैं और कुछ नहीं।

उत्तर(ग) युवा वर्ग का उनके प्रति यह कर्तव्य है की वे वृद्ध लोगों की हर जरूरत का ख्याल रखें उनके अकेला न छोड़कर उनका साथ दें, उनके लिए धन न भिजवाकर स्वयं उनकी देखभाल करें और उन्हें वृद्धाश्रम में न रखकर अपने घर पर रखें।

उत्तर(घ) स्वयंसेवी संस्थाएँ और सरकार वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धाश्रम खोल सकते हैं वहाँ पर उनका ध्यान रखा जा सके और उनके बुढ़ापे के दिन अच्छे बीत सकें और जहाँ उनका भविष्य भी सुरक्षित हो, जिन लोगों ने एक युवा पीढ़ी देश, परिवार और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

समाज को सँवारने का कार्य किया है उन्हें सहायतावस्था के समय अकेला छोड़ना अनुचित है और ये मानवोचित नहीं है।

उत्तर(ङ) जिस पीढ़ी ने देश, समाज और परिवार को सँवारने में अपना सारा जीवन लगा दिया उन्हें सहायतावस्था में उन्हीं के हाल पर छोड़ना अन्याय है और मानवोचित नहीं है। क्योंकि वृद्ध लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए और उन्हें उनके जीवन में सफल बनाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर देते हैं और युवा पीढ़ी द्वारा उनके प्रति ऐसा व्यवहार कष्टदेय होता है।

उत्तर(च) शीर्षक – 'वरिष्ठ जनों का समाज में योगदान'

2. (ii) निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :–

उत्तर(क) कवि को ~~करुणा~~ मौन करुणा के सहारे की अपेक्षा है।

(ख) यहाँ पर फूल का उदाहरण व्यक्ति की आयु से संबंधित है कवि कहना चाहता है की ~~बौर~~ यौवन काल में इस प्रेम की अचवाशित साँसे कितनी महत्वपूर्ण है इसलिए वे आकाश का विस्तार करने के लिए फूल का उदाहरण दे रहा है।

(ग) भाग्य की लहरों की तुलना अश्रुधाराओं से की गई है क्योंकि यह अश्रुधारा सागर की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लहरो के भाँति बहती हैं और समय आने पर यह अपना किनारा स्वयं ढूँढ लेती हैं।

(घ) कवि अपने आँसुओं का ऐसा प्रभाव देना चाहता हैं दूसरों की आँखो को भी नमित करदें तथा उनकी आँखों में भी अश्रुओं की बाढ़ ला दे ऐसा प्रभाव देखना चाहता हैं।

(ङ.) कवि कहता हैं की ये कैसा प्रभंजन उठा हैं सभी दिशाएँ जुड़ गई हैं एक नाविक, एक तरणी और न जाने कितनी आपदाएँ हैं इसलिए कवि मँझधार में किनारा चाहता हैं।

(खण्ड-ख)

3. निबंध – महानगरों में बढ़ती अपराधवृति

भूमिका :- देश के बड़े- बड़े महानगरों जैसे मुम्बई, दिल्ली, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े महानगरों में अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं लूटपाट, डकैती, बच्चो और महिलाओं से संबंधित अपराध आज समाज को खा रहे हैं और अपराधी खुलेआम इन अपराधों को अंजाम दे रहे हैं जैसे उन्हें कानून व्यवस्था का कोई डर ही ना हो, उन्हें रोकने के लिए सरकार कानून तो बना रही हैं, परन्तु फिर भी इसपर कोई विशेष बल नही पड़ रहा हैं लोगो का जनजीवन दिनप्रतिदिन भय के घेरे में आता जा रहा हैं

महानगरों में अपराध बढ़नें के कारण :- महानगरों में वैसे तो अपराध बढ़ने के कई

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कारण है जैसे - युवा पीढ़ी का चित्त भटक जाना वे अपनी उम्र से पहले हर कार्य को करना चाहते हैं भले ही उसके परिणाम दुर्गामी हो, उनकी मानसिकता पर इस चीज का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

समय पर रोजगार उपलब्ध न होने के कारण भी वे अपने आपको परिवार पर बोझ समझने लगते हैं और वे चोरी, डकैती, लूटपाट जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। वे कभी दूसरों की मनोस्थिति को नहीं समझ पाते।

समाज द्वारा युवा वर्ग को अपमानित करने के कारण या उन्हें मानसिक चोट देने के कारण भी वे अपराध करने पर उतारु हो जाते हैं आजकल सोशल मीडिया पर बढ़ता दुष्प्रचा दुषप्रचार भी संगाधिबद्ध घटनाओं को बढ़ावा दे रहा है, लोग एक दूसरे का चरित्र हनन करने के लिए भी अश्लील एम. एम. एस वायरल कर देते हैं यह कारण महानगरों में अपराध बढ़ रहे हैं।

सरकार द्वारा उचित कानून व्यवस्था में सुधार ना करना :-
सरकार हर विषय पर बात करने के लिए तैयार हो जाती है जो बात उनके पक्ष मे होती है परन्तु अपराध महानगरों मे बढ़ते अपराध जैसी समस्या पर सरकार भी चुप्पी साध लेती है। वे कई खोखले आश्वासन तो अवश्य देती है परन्तु कारवाही के नाम पर कुछ नहीं करती, अपराधियों को दण्ड देने के नाम पर पुलिस द्वारा उन्हें, कुछ ही घंटो में बेल दे दी जाती है। जिससे अपराधियों के मन मे कानून व्यवस्था का कोई भय नहीं रह जाता और वे उससे भी संगठित अपराधों को अंजाम देती है। सरकार कानून व्यवस्था में परिवर्तन

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करने के लिए तैयार है परन्तु कई विपक्षी दल उनके इन दलीलों का विरोध कर देते हैं और वे स्वयं अच्छे बनने के लिए भी ऐसे बिलों को संसद में पास नही होने देते, जिससे अपराधियों को लगता है, की यदि वे अपराध करेंगे भी तो भी वे बच जाएंगे।

महानगरों मे बढ़ते अपराधों के आंकड़े :-

पिछले दो दशकों मे महानगरों में अपराध बढ़ने की गति तीन गुना तेज़ हो गई है वर्ष 2018 की (ह्यूमन राइट्स वॉच) मानव अधिकार संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के दस सबसे अपराधिक शहरों में भारत के पाँच शहर शामिल हैं यहाँ तक की देश की राजधानी दिल्ली भी इन शहरों मे सम्मिलित है, अंतराष्ट्रीय महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रत्येक 5 मिनट में एक महिला बलातकार जैसे घृणित अपराध का शिकार बनती है इसमे 70% मामले पुलिस तक पहुंच नही पाते और अपराधियों को सजा प्राप्त नही होती। देश में कन्या भ्रुण हत्या जैसी समस्या भी जन्म ले चुकी है जो 2011 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या केवल 850 ही रह गई है, यह आंकड़े हमे स्तब्ध कर देते हैं।

निष्कर्ष

महानगरों मे अपराध को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। कानून व्यवस्था को ढंग से लागू करना चाहिए, लोगों को अपराध के प्रति आवाज उठानी चाहिए, विपक्षी दलों को सरकार की आलोचना नही करनी चाहिए। यदि महानगरों में ऐसे ही

अपराध बढ़ते जाएंगे तो एक दिन पूरी मानवता ही समाप्त हो जाएगी। और लोग एक-दूसरे पर विश्वास न करकर संदेह करेंगे।

---

५. (ii) पत्र

सेवा में,
पर्यावरण मंत्री,
उत्तर प्रदेश, गाँव राजोरी,

विषय :- अपद्रव्य के बहावों से पेयजल के दूषित हेतू।

महोदय जी,

मैं इस गाँव का सरपंच अपने गाँव की ओर से राज्य के पर्यावरण मंत्री का ध्यान इस समस्या की ओर खींचने हेतू पत्र लिख रहा हूँ। महोदयजी, मेरे गाँव के निकट दूषित अपद्रव्य नदि में मिलने से पेयजल दूषित होता जा रहा है जिसके कारण ये जल अब पीने योग्य नहीं बचा है और न ही इस जल से कृषि की जा सकती है, दूषित जल ग्रहण करने के कारण गाँव में बहुत से लोग बीमार हो गए हैं हम, पहले भी कारखाने मे दरखास्त कर चुके हैं की वे इन अपद्रव्यों को जल में न बहाए और इनके निकास के लिए कोई उचित व्यवस्था करें, परन्तु इसका उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैं

5
उत

उत

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मैं आशा करता हूँ, की आप मेरी इस समस्या पर अवश्य कारवाही करेंगें और मेरें विचारों पर ध्यान देकर मुझे कृतार्थ करेंगें और कोई उचित उपाय निकालेगें।

धन्यवाद

भवदीय,
नगर पंचायत
देवाशीश
तिथि – 9 मार्च, 2019

---

5. प्रश्न / उत्तर

उत्तर(क) स्तंभ-लेखन से तात्पर्य है की जब कोई पत्रकार अपने लेखन में इतना अनुभवि हो जाता की वे इससे संबंधित हर क्षेत्र में कार्य कर सके, उसे स्तंभ लेखन कहते हैं। स्तंभ लेखन का दायरा बड़ा व्यापक होता है और उन्हें अपने क्षेत्र से संबंधित हर विचार को लिखनें की स्वतंत्रता होती है।

उत्तर(ख) विशेष-लेखन केवल कुछ विशेष घटनाओं पर ही लिखे जाते हैं, उन्हीं से संबंधित रिपोर्ट तैयार की जाती है। इसमें उन्हीं पत्रकारों को लिखने की अनुमति होती है जो इस शैली मे व्याख्यान हों।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर(घ) पूर्णकालीक पत्रकार से तात्पर्य यह है जो पत्रकार एक निश्चित राशि लेकर उस पत्रिका में हमेशा कार्य करता रहे, उसे पूर्णकालिक पत्रकार कहते हैं।

उत्तर(ङ.) 1. रेडियो की भाषा शैली में निरक्षर लोग भी इस सुन सकते हैं।
2. यह सरल और सहज भाषा होती है, जिसे आसानी से समझा जा सकता है।

6. (i) आलेख :- (शहरों की ओर पलायन)

आज की ग्रामीण जीवन शैली में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन आता जा रहा है। लोग रोजगार प्राप्ति हेतु शहर की ओर पलायन कर रहे हैं इससे शहरी और ग्रामीण दोनों ही जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है जैसे - भारत एक कृषि प्रधान देश है और गाँव कृषि की जड़ है यदि लोग गाँव छोड़कर शहर आने लगेंगे तो देश में खाद्यानों का अकाल पड़ जाएगा और जनजीवन अधिक महँगा पड़ जाएगा इस दुर्गामी प्रभाव शहरों पर भी पड़ेगा क्योंकि यदि शहरी जनसंख्या इतनी तेज़ी से बढ़ेगी तो शहरी जीवन थम-सा जाएगा और वहाँ पर अपराध बहुत तेजी से बढ़ेंगे। गाँव मे मूलभूत सुविधाओं के न होने के कारण और रोज़गार के सीमित अवसरों के कारण भी लोग शहर की ओर पलायन करते हैं, हमें गाँव के ग्रामीण जनजीवन में नियमित सुधार लाने होंगें और उन्हें मूलभूत सुविधाएँ देनी होंगी। ताकि लोग शहरों की ओर पलायन न करें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(खण्ड — ग)

7. सप्रसंग व्याख्या

(i) लघु - - - - - - - - - जहाँ किनारा।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक (अंतरा भाग-2) में संकलित श्री जयशंकर प्रसाद की कविता 'कार्नेलिया' के गीत से उद्धरित हैं, यह उनके नाटक चंद्रगुप्त के द्वितीय अंक से लिया गया है। इन पंक्तियों में सिकंदर के सेनापति सैलूकस की पुत्री कारनेलिया सिंधु नदि के तट पर भारत की विशेषताओं को बता रही है

व्याख्या :- कवि इन पंक्तियों में कहता है की पक्षी अपने छोटे-छोटे पंखो के द्वारा दूर देश से भारत की ओर चले आ रहे हैं अर्थात् यहाँ पर इस देश में अंजान लोगो को भी आसानी से आश्रय प्राप्त हो जाता है, वे हवा के सहारे भारत देश की ओर ही मुख किए हुए हैं क्योंकि उन्हे वे देश अपना लगता है, जिस प्रकार बादल जल से भरे होते हैं उसी प्रकार भारत के लोगो की आँखें भी करुणा जल से भरी रहती हैं भाव यह है कि भारत के लोग कभी भी दूसरे व्यक्तियों को दुःखी नही देख सकते वे सदा दूसरो के प्रति दया का भाव रखते हैं, भारत तो ऐसा देश है जहाँ पर लहरो को टकराकर किनारा मिल जाता है अर्थात् यहाँ पर कहीं से भी आए लोगों को आसानी से आश्रय प्राप्त हो जाता है।

विशेष :- 1. कार्नेलिया ने भारत के प्रति आदार प्रेम प्रकट किया है।

2. बिड नीड - निज, और समीर-सहारे में अनुप्रास अलंकार है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. कविता मे संगीतात्मकता है।
4. भाषा सहज और सरल है।

8. प्रश्न / उत्तर

(क) उत्तर कवि का आशय है की बनारस मे जब वसंत का आगमन होता है तो, भिखारियों के चेहरे पर एक अजीब सी चमक आ जाती है उनके कटोरों का निचाट खालीपन दूर होकर उसमें भी एक चमक आ जाती है, भीख मिलने के कारण उनके खाली कटोरे भर जाते है और उनमें भी वसंत उतर जाता है।

(ख) उत्तर भरत ने राम की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है :-

1. भरत कहते है की श्री राम तो अपराधी को भी क्षमा कर देते है, वे कभी किसी पर क्रोध भी नही करते है।
2. मुझपर तो उनकी विशेष कृपा रही है वे खेल मे जान बूझकर स्वयं हार जाते थे और मुझे जिता देते थे।
3. वे बहुत शांत और सौम्य स्वभाव के थे, मार्ग के साँप भी उन्हें देखकर अपना विष त्याग देते थे।

9. काव्य सौंदर्य

(ख) चलती - - - - - - - - चली गई।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ० कवि कहता है जब बसंत का आगमन होता है तो सड़क पर बिछी लाल बजरी पर वृक्ष से पीले पत्ते झड़ कर गिरते हैं और पाँव के नीचे आकर चुरमुरा जाते हैं अर्थात बसंत के आगमन से पेड़ों पर नई कोंपले उग जाती हैं आम के वृक्ष बौर से भर जाते हैं और हवा में थोड़ी-सी गरमाहट महसूस होने लगती है, ऐसा लगता है जैसे सुबह छह बजे खिली हुई हवा खिड़की से अचानक आई फिरकी-सी गोल घूमकर चली गई।

इन पंक्तियों में कवि बसंत आगमन की बात कह रहे हैं, पिराए-पत्ते मे अनुप्रास अलंकार है, जैसे छह बजे गरम पानी से नहाई हो में उत्प्रेक्षा अलंकार है, भाषा सहज और सरल है।

(घ) तु खुली - - - - - - - - - - - - प्रथम गीति

उ० यहाँ कवि अपनी पुत्री सरोज के विवाह समय की सम्स्त समर्ण कर रहा है। कवि कहता है की तू एक उच्छ्वास की तरह खुली और पूरे शरीर में समा गई, यह बात तेरी आँखों से नही तेरे श्रृंगार से मुखरित हो रही थी। यह तेरे पति के प्रति तेरे प्रगाढ़ प्रेम को प्रगट कर रहा था तेरा श्रृंगार तेरे अंग-अंग मे समा रहा था और उसमें तेरे होंठ काँप रहे थे संकोच से झुकी तेरी आँखों में प्रेम साफ-साफ नज़र आ रहा था। मैंने देखा की मेरे गीतों का बसंत उस मूर्ति में साकार हो रहा है।

इन पंक्तियों मे कवि ने अपनी पुत्री सरोज के अकल्पनीय श्रृंगार का वर्णन किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. नत – नैनों में अनुप्रास अलंकार है।
3. अंग – अंग, थर – थर – थर में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। उत्तर(c
4. भाषा सहज और सरल है।
5. कविता छंद से युक्त है।

---

10. ~~प्रसंग व्याख्या :-~~
11. प्रश्न / उत्तर

(क) उत्तर बड़ी बहुरिया संवाद अपने मायके इसलिए पहुँचाना चाहती थी क्योंकि वह अपनी बड़ी हवेली जो की एक नाममात्र की बड़ी हवेली रह गई थी, वह वहाँ बहुत परेशान थी उसके पास खाने पीने के लिए कुछ न था, वे दाने दाने को मोहताज थी, वह बथुआ, साग खाकर अपना पेट भर रही थी उसे उधार न चुकाने के कारण सभी लोगों से सुनना पड़ता था इसलिए वह अपने मायके संवाद पहुँचाना चाहती थी। 12
(ख) संवदिया अपना संवाद इसलिए नही सुना पाया क्योंकि वह बड़ी बहुरिया के मायके की स्थिति से भलि भाँति परिचित था। वह यहाँ कैसे रहेगी, वह भाई-भाभियों की नौकरी कैसे करेगी, वे बड़ी बहुरिया की माँ की स्थिति देखकर और भी परेशान हो जाता है, क्योंकि यह तो उनके गाँव का अपमान था। क्योंकि वे उनकी लक्ष्मी को संभालकर न रख पाए, इसलिए संवदिया अपना संवाद न सुना पाया।

उत्तर(ख) जब लेखक कौशांबी में घूम रहा था। तब उसे अचानक एक खेत के मेड़ पर बोधिसत्व की एक सुंदर मूर्ति दिखाई दी, यह मथुरा के लाल पत्थर की थी और यह सबसे प्राचीन मूर्तियों में से एक थी, सिवाय सिर के पदस्थल तक यह मूर्ति सम्पूर्ण थी जब लेखक इस मूर्ति को खेत से उठाने लगा तो खेत में काम कर रही बुढ़िया चिल्लाने लगी और कहने लगी 'बड़े आए मूर्ति उठाने वाले इसे हम निकलवाए' हैं, इसका नुकसान कौन भरेगा। लेखक उस समय साधारण वेश भूषा में था। इसलिए वे इतना सब कुछ कह पाई, वे जानता था की बुढ़िया लालची है इसलिए उसने उसे दो रुपये देने का प्रस्ताव दिया। बुढ़िया ने पैसे ले लिए और कहा "हम मना नाही करत" तुम ले जाओ। इस प्रकार लेखक बोधिसत्व की आठ मीटर ऊँची मूर्ति प्राप्त करने सफल हो गया, यह मूर्ति उसे उसके संग्रहालय के लिए चाहिए थी।

---

12. (i) कवि परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

जन्म :- 1898 – 1961

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के मेदनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ। उनकी स्कूली शिक्षा केवल 9 वीं कक्षा तक ही हो पाई। पत्नी की प्रेरणा के कारण उनकी रुचि कविता लेखन में बढ़ी। उनकी माँ का निधन बचपन में ही हो गया था। सन 1918 में उनकी पत्नी का निधन हो गया और अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उन्हें अंदर तक झंझोर दिया।

काव्यगत विशेषता :- निराला जी मुक्त छंद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं उन्होंने 1916 में प्रसिद्ध कविता 'जूही की कलि' लिखी थी जिसके बाद उन्हें बहुत प्रसिद्धी मिली। उन्होंने 1922 में 'राम कृष्ण मिशन' द्वारा प्रकाशित पत्रिका समनव्य का संपादन किया। वे 1923–24 में मतवाला के संपादक मंडल से भी जुड़े हिन्दी के स्वछंद आधार स्तंभ कहे जानेवाले निराला का काव्य संसार बहुत व्यापक है। भारतीय साहित्य विचारों का जैसा बोध उनकी कविताओं में आता है, वह बहुत कम कवियों की रचनाओं में देखने को मिलता है।

साहित्यिक परिचय :- निराला की प्रमुख काव्य कृतियां हैं- परिमल, गितिका, अर्चना, अराधना, गीतगुंज, बेला, नए पत्ते, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इसके अलावा उन्होंने उपन्यास भी लिखे जैसे 'अलका की चाची' और 'बिल्लेसुरबकरिया' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके समस्त रचनाओं का संकलन 'निरालारचनावली' के नाम से आठ खण्डों में प्रकाशित हो चुका है।

13. (i) सूरदास को अपनी झोपड़ी जल जाने का दुख नहीं था। सूरदास के दुश्मन भैरो ने उसकी झोपड़ी में आग लगा दी थी। और वे उसकी जीवन भर की जमा पुंजी भी उठाकर ले गया था। उसने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि भैरो की

पत्नी सुभागी उससे लड़कर सूरदास की झोपड़ी में रहने आ गई थी, इसके लिए भैरो उसे सबक सिखाना चाहता था, इसलिए उसने ऐसा किया। सूरदास को झोपड़ी जल जाने का इतना दु:ख नहीं था, जितना की जमा पुंजी के नष्ट हो जाने का था। वे इससे कई योजनाएँ पूरी करना चाहता था। वे इससे अपने पुत्र का विवाह करवाना चाहता था ताकि वे भी सुख से दो रोटी खा सके, वे कुआँ भी बनवाना चाहता था। इन्हीं रुपयों से उसने मित्रों को पिंडा देने का इंतजाम किया था। परन्तु जमा पुंजी के ना मिलने से उसे अपनी सभी योजनाओं पर पानी फिरते दिख रखा था।

15 प्रश्न/उत्तर

(ख) उत्तर कोइयाँ एक जल पुष्प है इसे कोकाविलि कहते हैं, यह पुष्प जहाँ पर भी गड्ढे होते हैं वहाँ पर अपने आप ही उग जाते हैं, रेलवे स्टेशन के किनारे-किनारे इन पुष्पों को आसानी से देखा जा सकता है, यह पुष्प काफी सुंदर होते हैं।

विशेषताएँ :-

1. कोइयाँ के फूल उसी प्रकार उसी तरह प्रतीत होते हैं जैसे सरोवर में खिली हुई चाँदनी हो।
2. शरद ऋतु में यह फूल अपने आप ही उग जाते हैं।
3. इसकी सुगंध से वातावरण सुगंधित हो जाता है।

(घ) उत्तर अरोहण कहानी के आधार पर हम कह सकते हैं की भूपसिंह और शैला ने

विषम
विशम परिस्थितियों में भी अपने जीवन को सफल बनाया, भूपसिंह हिमाम की गहरी ऊँचाई पर रहता था, उसने कठिन पहाड़ी इलाके में खेती करना शुरू किया उन्होंने खेतों को ढलवा बनाया ताकि आसानी से खेती की जा सके, परन्तु एक और समस्या यह थी की खेती के लिए पानी कहाँ से आए, एक दिन भूपसिंह और शैला दोनो पहाड़ की असीम ऊँचाई पर चढ़ गए, उन्होंने वहाँ देखा की एक झरना सूफिन नदी में गिर रहा था, यदि इस झरने को मोड़ लिया जाता तो पानी की समस्या हल हो सकती थी। परन्तु बीच में एक पहाड़ था। जिसे काटा जाना था इस कार्य के लिए उन्होंने क्वार का महीना चुना। जिसमें रात को बर्फ जमती है और दिन मे पिघलती है अर्थात इतनी की धार तेज न हो और इतनी सख्त भी नही। बड़ी मेहनत के बाद उन्होंने झरने का रूख मोड़ लिया और अपने खेतो में जल संचय की व्यवस्था की। इससे हम कह सकते है की शैला और भूपसिंह ने विषम परिस्थियों में अपनी जीवन की कहानी लिखी।

---

10. सप्रसंग व्याख्या :-

(i) उसके चित्र — — — — — — — लगी हुई।

प्रसंग :- प्रस्तुत गंद्यय हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग-2 से सम्मिलित कहानी 'यथा समय रोजते में रोजते से' संबंधित है। इसके लेखक

राम विलास शर्मा हैं। कवि कहता है की यथार्थ मनुष्य का एक अंतिम सत्य है उसे बिना किसी संदेह के इसे स्वीकार करना होगा।

व्याख्या :- कवि कहता है की मनुष्य को यथार्थवादी बनना आवश्यक है क्योंकि यथार्थ के बिना उसका जीवन एक असत्य बनकर ही रह जाएगा। कवि प्रजापति की स्थिति बहुत गंभीर है, वह वर्तमान के यथार्थ से भलि-भाँति परिचित है, वे वर्तमान के यथार्थ को स्वीकार करके भविष्य की क्षितिज की कल्पना कर रहा है।

विशेष :- 1. कवि ने वर्तमान के यथार्थ और भविष्य के क्षितिज की गहरी कल्पनाएँ की है।

2. चमकीले और चरित्र में अनुप्रास अलंकार है।

3. भाषा सहज और सरल है तथा समझने योग्य है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in